अनोखा संग्रह

लेखकः गीता धर्मराजन
चित्रांकनः अतनु रॉय

यह किताब

....

की है।

dFkk d fo"k; e

कथा एक लाभ निरपेक्ष संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में हुई। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में कथा का अनूठा योगदान है। कथा झुग्गी-झोपड़ी, बस्तियों और सरकारी स्कूलों में काम करती है ताकि हर बच्चा मज़े के लिए और अच्छी तरह पढ़ सके। महिलाओं और अध्यापिकाओं के द्वारा कथा बच्चों में उनकी प्रतिभा को उजागर करने में मदद करती है।

हमारी किताबें, वर्कशॉप और शिक्षण केन्द्र, कहानी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ती हैं। कथा का अनुवाद के क्षेत्र में किया हुआ काम भारतीय प्रकाषन के इतिहास में अनूठा माना जाता है। इसे *इकोनोमिक टाइम्स* ने इन शब्दों में सराहा है, "A unique and special moment in Indian publishing history ..."

कथा की पुस्तकों को विश्व स्तर पर ख्याति मिली है। अंतर्राष्ट्रीय ज्युरी द्वारा प्रतिष्ठित एस्ट्रिड लिंडग्रिन पुरस्कार के लिए भी कथा का नामाँकन किया गया है। बाल साहित्य के क्षेत्र में यह पुरस्कार विश्व में सबसे बड़ा माना जाता है।

कथा नवीन एवं अनुभवी लेखकों, अनुवादकों और चित्रकारों के साथ काम करती है।

क्या आपको बच्चों के लिए लिखना, चित्र बनाना, अनुवाद करना अच्छा लगता है? तो अपनी प्रतिलिपि इस ईमेल आई डी पर भेजें: editors@katha.org, और बनें कथा परिवार का हिस्सा।

"[Katha] ... an educational jewel in India's crown."
— **Naoyuki Shinohara, Deputy Managing Director, International Monetary Fund**

"Katha stands as an exemplar for all the creative projects around the world that grapple with ordinary and dramatic misery in cities."
— **Charles Landry, The Art of City Making**

"Katha has a real soft corner for kids. Which is why it … create[s] such gorgeous picture books for children."
— **Time Out**

"Katha's work is driven by the idea that children can bring change to their communities that is sustainable and real, just as the children do in [their books]."
— **Papertigers**

अनोखा संग्रह

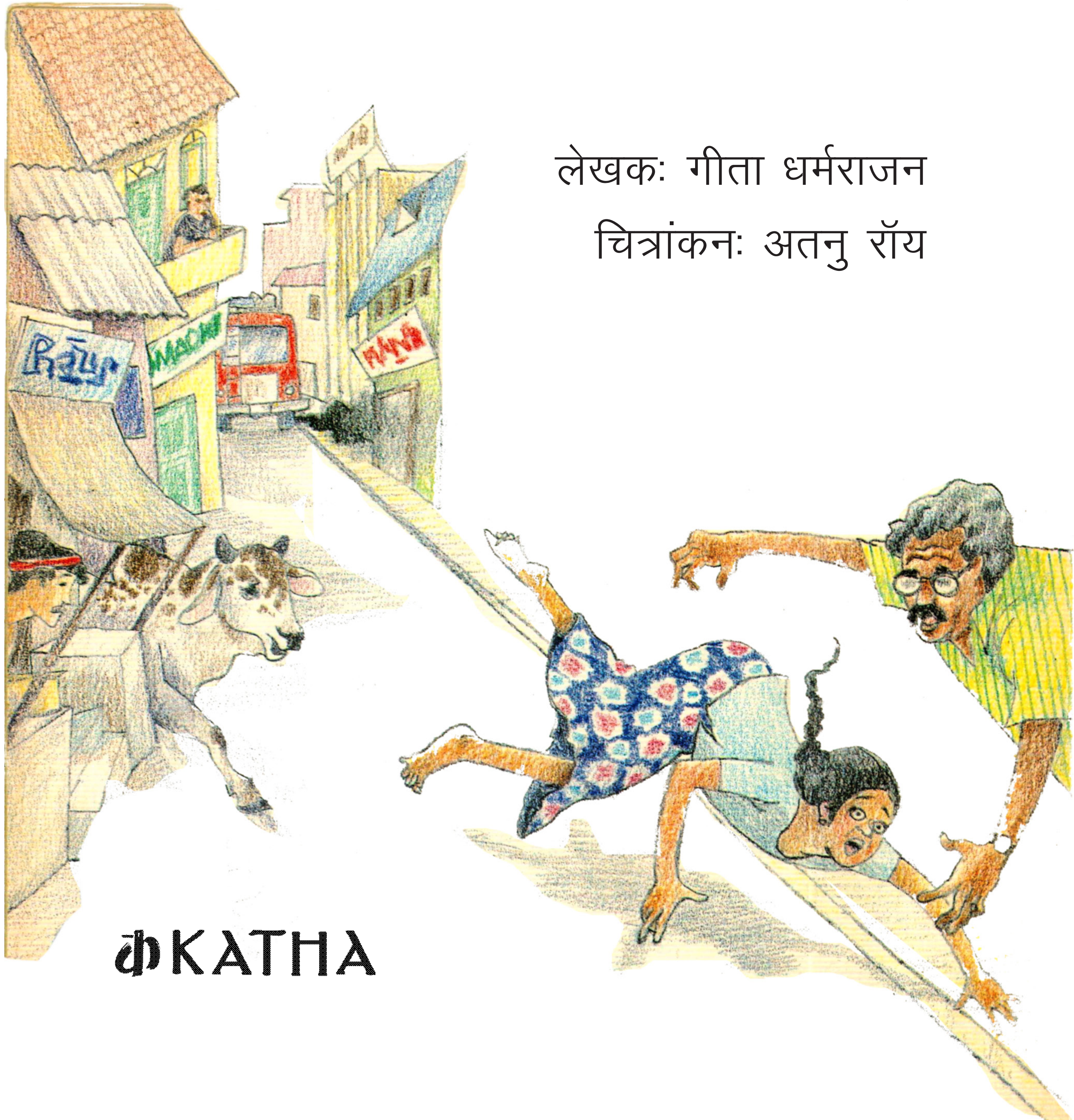

लेखक: गीता धर्मराजन

चित्रांकन: अतनु रॉय

KATHA

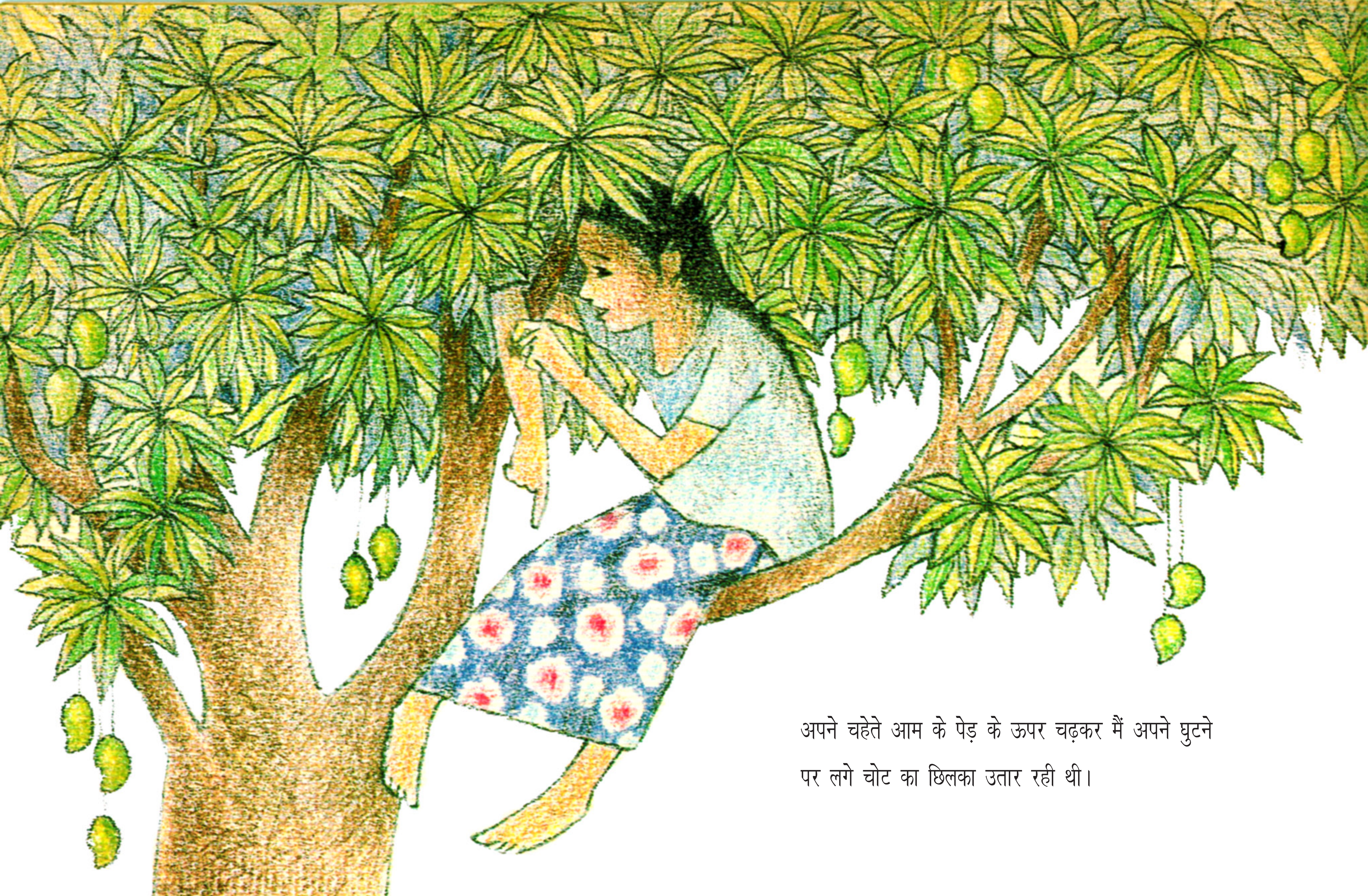

अपने चहेते आम के पेड़ के ऊपर चढ़कर मैं अपने घुटने पर लगे चोट का छिलका उतार रही थी।

अचानक मुझे छुट्टियों में मिले होमवर्क की याद आई ।
अनु टीचर ने कहा था, 'सब बच्चे अपनी पसंद की चीजें इकठ्टी करेंगे। जैसे स्टैम्प, माचिस के डिब्बे, किताबें या अन्य कुछ भी।'
अब, स्कूल खुलने का दिन भी पास आ गया था। और मैंने कुछ भी तो जमा नही किया था।
क्यों न मैं अपनी कॉपियाँ दिखाकर कहूँ कि मैं अपनी कॉपियों में 'बहुत अच्छा कार्य!' जमा करती हूँ।
पर ऐसा करके क्या तुम स्वंय ही अपने सारे दोस्तों से दुश्मनी न मोल लोगी? मानों अम्मी का स्वर मुझे चेतावनी दे रहा हो।

या फिर क्यों न मैं अपने ढेरों पुराने कपड़े ही दिखाऊँ जो अब मुझे पूरे नहीं आते।
काश! अभी कुछ जादू हो जाता और मैं छोटी, खूब छोटी हा जाती। इतनी छोटी कि काई मुझे देख भी न पाता! फिर मुझे स्कूल भी न जाना पड़ता!

अभी मैं कुछ तय भी न कर पाई थी कि मुझे अम्मी की आवाज सुनाई पड़ी। 'सायरा! जरा भागकर नुक्कड़ वाली सावित्री मामी से थोड़ी चीनी तो माँग लाना!'
मैं जल्दी-जल्दी पेड़ पर से उतरी और यों भागी मानों मेरे पीछे भूत पड़ गया हो।

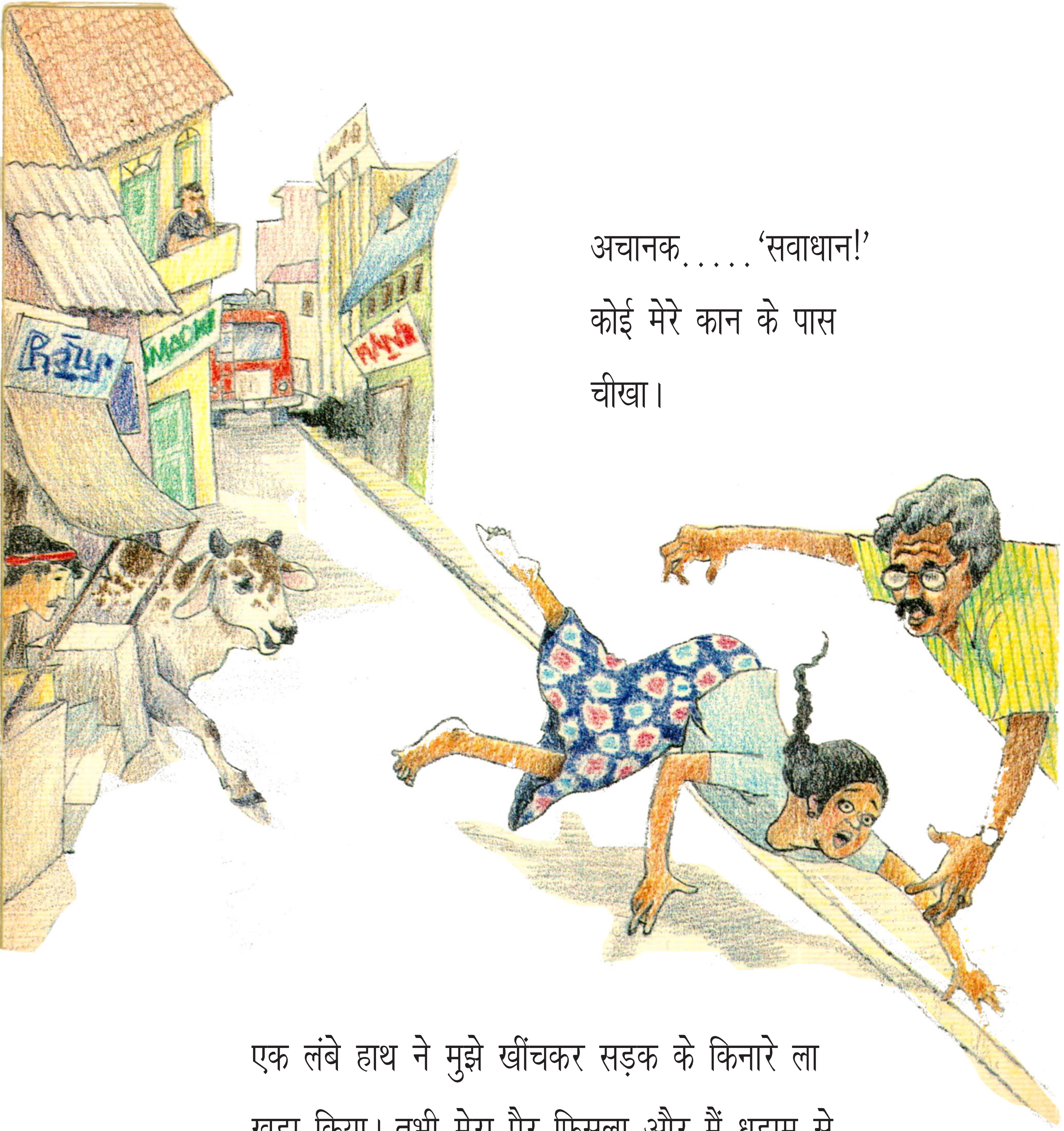

अचानक..... 'सवाधान!' कोई मेरे कान के पास चीखा।

एक लंबे हाथ ने मुझे खींचकर सड़क के किनारे ला खड़ा किया। तभी मेरा पैर फिसला और मैं धड़ाम् से जमीन पर गिरी।

'बेवकुफ़ लड़की!' वही आवाज फिर से बोली। 'थोड़ी देर हो जाती तो वह बस तुम्हारे ऊपर से चल निकलती। देखकर नहीं चला जाता सड़क पर?'

मुझे चारों ओर मे लागों ने घेर लिया था। न चाहते हुए भी मेरी आँखों से आँसू बह निकले।

मेरे बायें पैर पर एक बड़ा-सा घाव था। दायें घुटने पर पिछली चोट की बगल में ही एक और चोट थी । मेरी हथेलियाँ खून से भरी हूई थीं। जब तक मैं अपने कपड़े झाड़कर उठी और उस आदमी को ध्न्यवाद कहा, मैं दो और चोट देख चुकी थी। किसी तरह लंगडाती-गिरती मैं घर पहूँची।

‘सायरा!’ मुझे देखते ही अम्मी की चीख निकल गई।

उनसे लिपटकर मैं खूब देर तक रोती रही।

कुछ ही देर में, अम्मी मेरे ढ़ेरों घाव की सेवा-दवा में लग गई थीं।

‘तुम्हीं शायद एक लड़की हो जा बिना मतलब चोटों से भर जाती हो। कोई कहेगा कि ...’

‘घाव जमा करना ही इस लड़की का शौक है!’ मैंने चिल्लाकर अम्मी की बात पूरी की।

‘धत्। मैंने यह कब कहा?’ अम्मी हँसने लगीं।

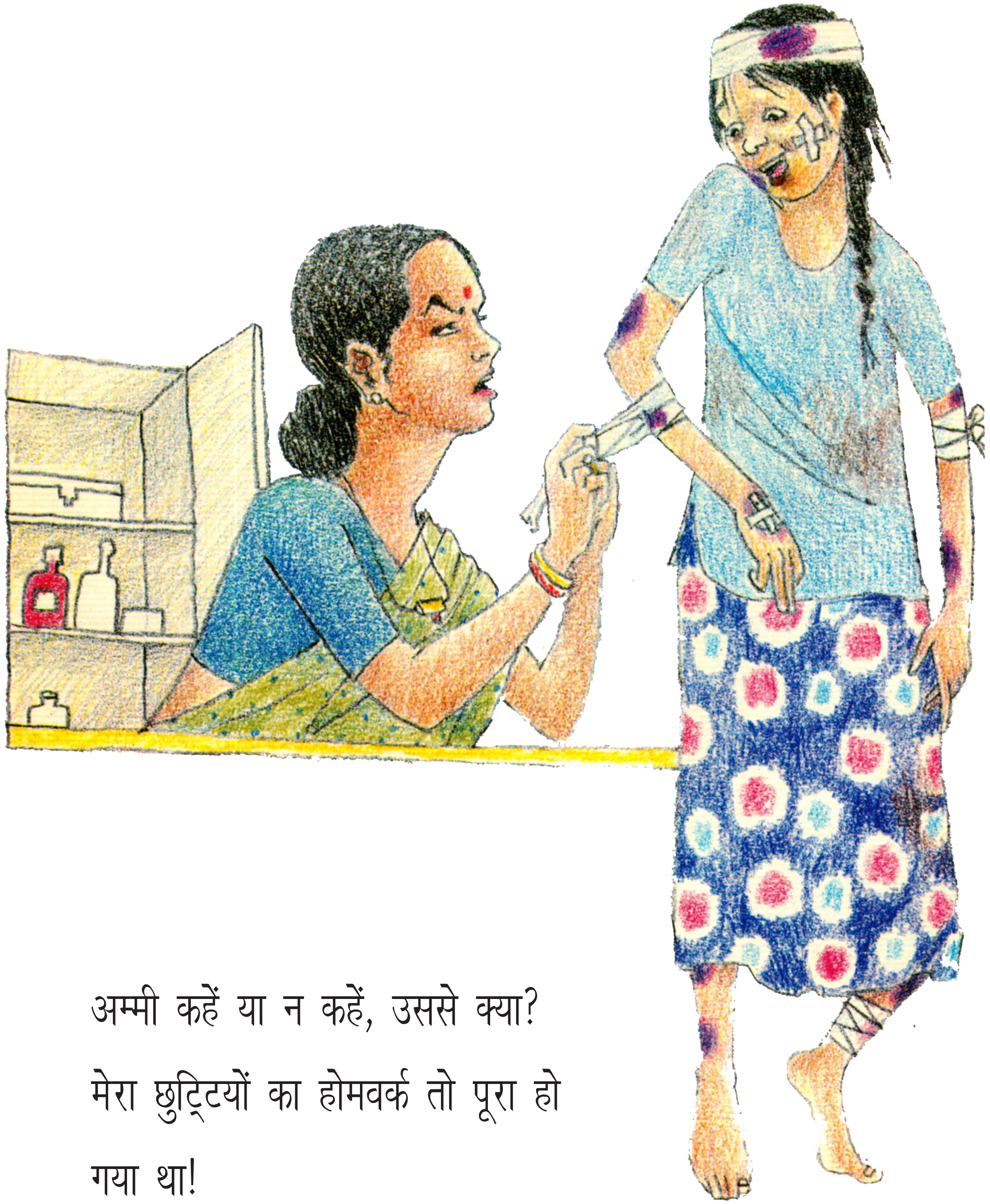

अम्मी कहें या न कहें, उससे क्या? मेरा छुट्टियों का होमवर्क तो पूरा हो गया था!

उस दिन स्कूल में जब
सारे बच्चे अपने द्वारा
जमा की गई चीजों को
दिखा रहे थे तब मैं देखने
लायक बनी हुई थी।
माथे-पर सात बड़े-बड़े
टाँकें पड़े हुए थे। मेरा
अंगूठा टमाटर जैसे लाल
और मोटा हुआ पड़ा था।

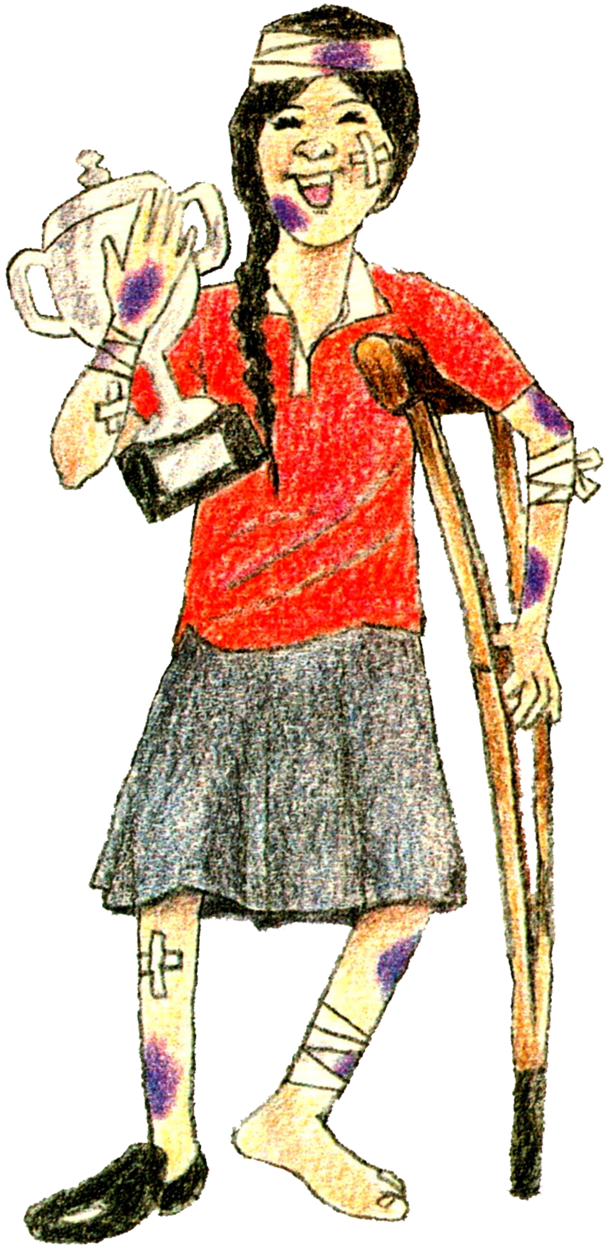

और मेरे पैर पर दो पट्टियाँ बंधी हुई थी, जो खून से लाल हो रही थीं। और मेरे सभी दोस्त ईर्ष्या से जलकर राख हो रहे थे। खासकर तबश जब बड़ी-टीचर ने ऊँची आवाज़ में कहा कि मेरा संग्रह ही 'सबसे अधिक दुलर्भ और असमान्य हैं!'

'और अपने शौक को पूरा करने के लिए तुमने वाकई जानतोड़ कोशिश की है, है न?'

मैं मुस्करा दी।

गीता धर्मराजन बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और *पेन्सिलवेनिया* विश्वविद्यालय की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किए गए इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

अतनु रॉय ने सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के लिए चित्रांकन किया है। उन्होंने अपना अधिकतर कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। फिर यह कोई अचम्भे का कारण नहीं है कि अतनु, जो कि *इंडिया टुडे* में राजनैतिक कार्टूनिस्ट रह चुके हैं, को बच्चों की चित्रकारी के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे चिल्ड्रन्स चॉइस अवॉर्ड फ़ॉर बुक इलस्ट्रेशन और इब्बी सर्टिफ़िकेट ऑफ़ ऑनर फ़ॉर इलस्ट्रेशन।

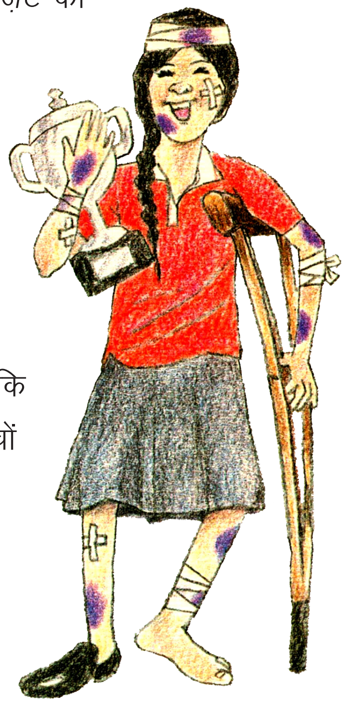

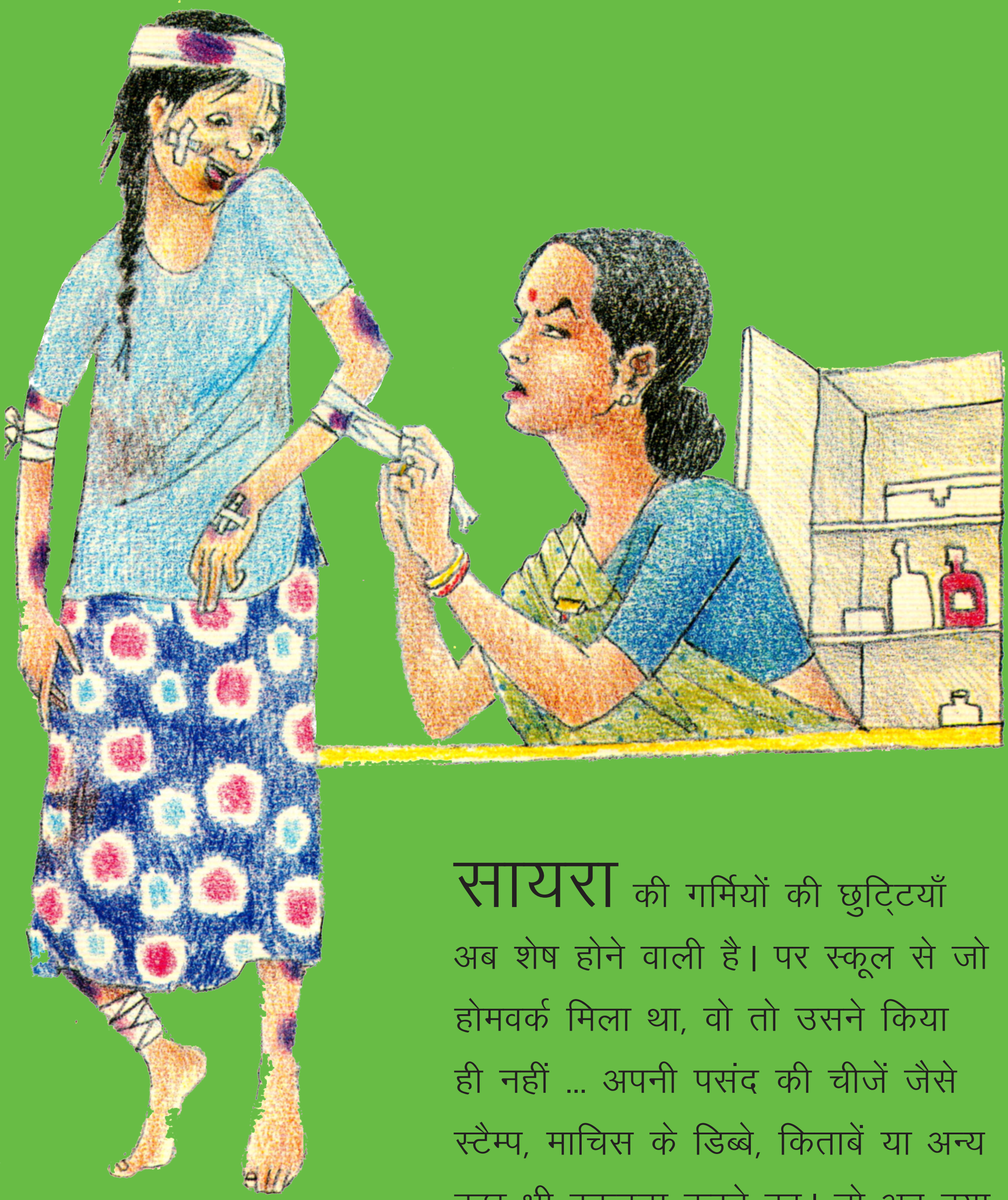

सायरा की गर्मियों की छुट्टियाँ अब शेष होने वाली है। पर स्कूल से जो होमवर्क मिला था, वो तो उसने किया ही नहीं ... अपनी पसंद की चीजें जैसे स्टैम्प, माचिस के डिब्बे, किताबें या अन्य कुछ भी इकट्ठा करने का। तो अब क्या करेगी सायरा? क्या होगा उसका यह अनोखा संग्रह? पढ़िए और जानिए!